नाहिपैताकुजगंवणिनामादोसंति
तेनहिवेअवंतितदागाह्यागजेडा
सौपचाक्रमं॥

अथमंत्रकाष्टिरकार्य्यका
सदृष्टांतलेनेकास्वप्नम
रोजकरना१०८मालानित्यक
रनी७दिनतकरात्रिको॥ॐ
नमोमाहाभद्रावेटका
सर्वार्थसिद्धकारेजागमम
स्वप्नेदर्शनायकुरुकुरुस्वा
हा॥

स॰सा॰
१

श्रीरामायनमः॥नत्वागुरुं समालोक्यस्वरशास्त्राणिभूरिशः वक्ष्येयुद्धजयोपायंधार्मिकाणांमहीक्षि
ताम् १ बहुधाविदधेसदाशिवोऽत्रस्वरशास्त्राणिनंदिकवाक्यतांमु भगवानयमेववेदसम्यग्गुरु
मार्गानुगतोपरस्तुलोकः २ वक्ष्याम्यहंयदिहकिंचनसर्वसारमेतावदेवपरिचिंतसन्नपग्रवक्त्तः
एकोपिकोटिभटलोलपतंगदीपंलीलामुदानुभवतुस्फुटकौतुकेन ३ नैतद्देयंदुर्विनीता
यज्ञातुज्ञानंगुरुसंतद्धिसम्यक्फलाय अस्यानेहिस्याप्यमानेववाचादेवीकोपान्निर्दहेन्नो
चिराय ४ विनयावनतायदीयमानाग्रभवेत्कल्पलतेवसत्फलाय उपकेसमनुचिंतकानि
शास्त्राण्युपकारस्यपदंहिसाधुरेव ५ पंभेगंगागतिस्तेदहदधितदधः स्वर्गखंडान्विनाचः काद्या
स्माली ष्ठा तेङ अम पिसुभटयानीमवर्गोस्यसंस्ये ॥ स्वाग्रेशेषेष्वशेषेविजयपरिभवौदंष्ट्र

[illegible]४ पूर्षेनं स्त्रमासालिकारिजेताक्रमात् इहमतोग्राग्रेमितुल्लमाते: ६ अंकास्तुलारि
भजतिधभुगानकास्युरूषेटरतोत्तरमितोरहितेविधाथतस्मात्तुनदेहेतिरोषवहुत्वतः
स्याज्जेतासुरवबलपः सुधियाविधेयः ७ वर्गोक्तकांकादशातिघासकालारितधुतो॥
नाभ्राः संभाजितायोस्याद्विजयोधिकशेषके ८ मूलाद्भाभिजिदेवुपोडुदशमीववद्ध

स·सा·  हानी २४  पु·७  

२ श्रीधुवांतोपचयइतरयोर्ध्रुवतो हिएमतपवि ११ भौमे नयोस्तेभगमिनो अग्रोरोन्द्रेगोस्तक्षेत्रे ग्रानेदयिनो यनवार
के ऽजातभारे युक्तेऽन्तु परतो न्तिमभादिमसस्वादिस्तत स्त्रिंदुभरवास्त्रपिपंचके धु १२ दूपा द्वयह
११ पनर्तुभुचतेत त्कोथभागांतरभुक्तावा व्यथरे यनेत्वहरिमोक्के सान्ययोः पद्वयोः राधेभाद्रपदेस
पे·र· स्यशरिषाषाढेनमस्युभधौ पोषयोर्विभुकेऊर्जे उदयी माघो ये योरीस्तथा १२ मात्रानाममुरवा ८
राजस्तरचमंत्रादिसिद्धोहलचसंरव्यैकतपःसंख्यायाह्नभि ४ पशीका हो मि ५ जीवाच्छुभेपिंडाज
ऽमात्रिकवर्णेक्यम ९ हतेशेषक्रमसक्तो तोमावर्णग्रहपिंड जीवमरहाज्येस्यान्मः ५ हयोगिकः
२ १४ योगाचायोगभजनेवर्णेचासर्वमाहवहेतू विशेषतस्तोसं ग्रामेसाहिसवेस्वराग्रलीयाः १५
य·८ जयपराजयस्थानमाह तेषामवांयत्तभरौमितिहेलांचनाम्नोरलोतुमितितामह त्वापयस्सा हीना
मतिविजयमाह तयाधिकासातुल्यासमचसमरे यादि चापिसंधि १५ अथवालकुमारादिस्वरवशाद्
वलमाह

मटानां जय पराजयस्था नचक्रम

| ला | व | भ | रा | प्र |
|---|---|---|---|---|
| इ | [illegible] | ४ | २ | [illegible] |
| २१ | ३ | ३ | ६ | औ |
| क | ख | ग | घ | च |
| छ | ज | झ | ट | ठ |
| ड | ढ | त | थ | द |
| ध | न | प | फ | ब |
| भ | म | य | र | ल |
| व | श | ष | स | ह |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | [illegible] | | वृ·वृष तुला | कर्क मेष वृश्चिक | धनु मकर कुंभ |
| उत्तर ए | दुर्गम [illegible] | [illegible] २ | उत्तर मीन | [illegible] | द· सिंह |
| | वृश्चि [illegible] | | [illegible] कन्या मिथुन | [illegible] | [illegible] |
| | | | | | |

पूर्वादि दिक्चत्वरतस्तु तेच सुरवंज येषु निजय
स्तु घातात् स्यादघयो नीतिमयोः स्वशत्रु वलाकला
भाभुवमाददीत १६ इत्यानीतः सितः कुजः शनीरवि
रा हुश्च ॥ प्रतीचीं सो· गुरू मह यो रक्ष उदग्दिशोस्तमह
योस्तवायवामह १७

| श्रं | मि | गं | गा | ग | ति | ते | द | ह | द | धि | तु | ला | रि | भं | ज | ती | ध | भु | गा | न | का |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ५ | ३ | ३ | ३ | ६ | ६ | ८ | ८ | ८ | ९ | ६ | ३ | २ | ४ | ८ | ६ | ६ | ४ | २ | ० | ९ |
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | ओ | औ | अं | अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | ओ | औ | अं |
| क | ख | ग | घ | ङ | छ | ज | ञ | ट | ठ | ड | क | ख | ग | घ | ङ | छ | ज | झ | ठ | ठ | ड |
| ढ | ण | त | थ | द | ध | न | प | फ | ब | भ | ढ | ण | त | थ | द | ध | न | प | फ | ब | भ |
| म | य | र | ल | व | श | ष | स | ह | ०ं | ०२ | म | य | र | ल | व | श | ष | स | ह | ०२ | ० |

| द | शा | ति | थी | स | का | ला | रि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | ५ | ६ | ४ | ७ | १ | ३ | २ |
| अआइ | द | च | ट | त | प | य | श |
| उऊऋ | ल | छ | ठ | थ | फ | र | ष |
| लृलृए | ग | ज | ड | द | ब | ल | स |
| ऐओऔ | घ | झ | ढ | ध | भ | व | ह |
| अंअः | ङ | ञ | ण | न | म | ०१ | ० |

कुलाकुलगणाः
मूल० आर्द्रा० भि
जित्० धनिष्ठा
द्वग्भी० षष्ठी०
द्वितीया० बुधवा
रः। इति कुलाकु
लगणाः कुला
लाः।

कुलगणाः
चि० आ० विशाखा०
ज्ये० शततारा०
श्र० दशम्यां०
प्र० द्वि० चं० मं०
प्रथ० सप्तम्य०
न० अष्टमी० प्र०
… … … …

अकुलगणाः
भरणी० पुनर्वसु०
पुष्य० स्वा० ह० पू०
श्र० उत्तरा० पूर्वा०
उत्तरा० रे० श्रवण०
तृ० पंचमी० सप्त०
नव० एकाद० त्रयो०
पूर्णिमा० र० बृ० शु०

तीयाबुधौ राशौ संधिकरः कु
लाकुलगणाः स्युः योज्या
र्थे कुलः। सोमाद्या स्थितभौमौ
धतिष्ठयौ युग्माः कुजौ भागेवः सं
धौ सौः कुलसंज्ञकौ विजयतेय
स्मिन्नृ वाता भौमौ वमू स्यु क्षोर्थः।
पंचाशोऽ स्वराः कछडधभव
मुरेवषुकृत्तिन थे जने बुधसुः न
दे दे त्तिधौ स्तिषि कपिशल सौ
वतीपूर्व तरा भोग भाजः ना
म्नोवा लः कुमारो बुध समजरम
तो स्वादि व लौ स्व न स्तेसिद्धुक

सू.ल.
३ यामार्द्धैरगुरस्त्रिपाशिकक्रुभो सोमवृद्धीषट्ठीनिशि पृष्ठे ददिशानः ॥ प्रभोद्विघटिको सोतर्धंतुर्य्ये व्रजन्नीशा
वाक्यवनेन्द्रराह्म सहिमगवृगिनमतिचौदिशः २४ अथयोगिनीबलमाह॰ प्राक् सोमाः नैलत्र रक्षौ वाक्
५ पाश्चयनिलेदृशादिनु दशंतेः ॥ तिथिभिस्तिर्थ्यादंतोऽर्धमहरेति नवकुयोगिनीशस्ता २५ अथयोगि
नीनामान्याह॰ ब्राह्मीकौमारीवाराही वैस्नवी थैन्द्रीच स्याञ्चंडिकाचमाहेस्वरी महालक्ष्म्यभिख्या
चे २६ अथराहुबल योगिनीबलप्रशंसामाह पृष्ठेदद्वेयोगिनीराहू प्रक्राय स्येकोयंशतुलंतानिह
ति॰ श्रेष्ठं सर्वेभ्योबलेभ्यस्तदेतत्संदेपोयंसर्वे सारोभ्यधायी २७ अथरव्यादिवारेषु युद्धवर्ज्यकालांश

| ३ | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इ॥ा॥सेमु २।५ | व४।ा।स २।१।२ | आ।७।१ १५।२।३ | रे६ २० | उ१ ६ | प्रा२ २१ | ल | लौ | त | का | भ | ल | वि | मा | सा | र | मे | द | ल | ति |
| उ।२।१४ ३।२२ | महूर्त राहु | द।२।१० १८।२६ | उ२ १० | योगि नीबल [illegible] | द५ १३ | ८ | २ | ६ | १ | ४ | ७ | २ | ४ | ७ | २ | ५ | ८ | २ | ६ |
| वा॥३॥११ १९।२७ | पू८ १६ | नै४ १२।२० २८ | वा७ १५ | प६ १४ | नै४ १२ | र | चं | मे | बु | गु | शु | श | र | चं | मे | बु | द | बृ | श |

प्रहरनाह॰ हालांतकामसखियामदले
स्तुकालः स्यूर्य्यादिवासरगतो युधिवर्ज्ज
नीयः ॥ भासारमेदलतियामदला निभा
नोवारक्रमादोपनरः खहितार्थमुक्तात
२८ अथवारविशेषाऽर्द्धयाम भोगप्राप्त्या
कांततत्तद्दिग्वर्ज्यमाह॰ वारेशमेषुराधि
निवेष्ययपपृष्टेपमदिशस्थानकमेण

अथ परविहतदिशमाह॰ द्वितीययामार्द्धतस्वयमामे यामेस्तृतीयांचततस्तृतीयां अर्कः प्रतीचीप्रभृतीर्नि
तिप्रागंतयामार्द्धयुगेन याम्याम् १८ अथ चंद्रहतदिशमाह॰ ईशानादि दिशो चंद्रो यामे यामेनिहंतिवृ
षकुंभौ मृगसिंहौ धन्वितथा कन्यामिथुने क्रमेलोव १९ अथ घस्रपरास्यकेतुहतादिग्विदिशमाह॰
मूढा... प्रहरे रात्रि... दिवानिशिच॰ ... पश्चात्सन्मुखयात्रा विहिता न स्यात् २०
अथ यायिस्थायिनोरविचंद्रयोः पृष्ठदक्षादिस्थितो स त्यांजयपराजयावाह॰ पृष्ठकोयचदक्षि
णापिरतम्भ... यायिवामेजयः किं त्वके वहतीह यायीनिविधोवाह स्थितेस्थायिनो॰ छायापृष्ठग
दक्षिणानिलोपार्श्वी वामे... यायितु अवेदुवहेपरस्थतुरवेर्वामः पश्चाद्दः स्थायी २१ प्राचीमु
दीचीवा चंद्रेगते स्थायी जयी भवेत् प्रतीचीद
क्षिणेचंद्रे यायीविजयमाप्नुयात् २२ अथ वायु
वेलमाह वायुरग्रेद्दक्षिणे च वहन्सूचयते
वेला॥ सन्मुखीन... वाम... भटानां भंग
स्त्र... २३ अथ राहुवेलमाह ...
तके... तेपु... पोलस्तर... दिशो

| ई.व.ष कुंभौ | पूर्व | अ.म | ई.७ २५ | पूर्व ४।१२ | अ.२ ६ | ई.४ | ई.१ | अ.६ | ई.८ | पूर्व ५ | अ.२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| उ. | चंद्र हानि | द | उ.२ १० | [illegible] | द.६ १४ | उत्तर ३ | [illegible] | द. ३ | उत्तर ३ | [illegible] | द ७ |
| वायु.७ क मि | पश्चि | नै.ध न ३ | वा.५ १३ | पश्चि ८ १६ | नै. ३ ११ | वा. २ | पश्चि ५ | नैऋ. ८ | वा ६ | पश्चि १ | नै ४ |

धीत्याभभुक्तनाड्योनरवाप्तपरिशिष्टश्चयोर्गतसदपि तत्कालश्चाधीभवतिरव्यावाघागतिन्नुति ६० लवस्तुघटिकेह ३५॥ अथराहुकालानलचक्रमाह पत्तोजीवोवलितगतिनाराहुनेतोडलोका। १३ गम्योस्तः स्तघ्नतमुडशायं १५ कलैरीअस्तस्तंसस्थाप्यिनोयाम्युडुपतिरिमोजीवभोतज्ज्याप श्रेताज ३४ धंकिमपितुवरं कर्त्तरीजगधतस्तु ३६ अथना मनक्षत्रज्ञानापावकहडाचक्रमाह भुद्धेर५ कोष्ठेषुतिर्य्यकुत्त्ववकहडालिरवाधः स्थितालीषु तद्धेस्ताम्युक्ता त्तेः स्वरैश्चक्रमत्रइह कुपुग्घङ्केशाम ध्यकोष्ठे० षेथेरुद्धाअरलीअनलतइहासार्पमरीभंपादाएवं चान्येष्वपिद्घा मध्यरतपुपुकुढं तापोमध्यकोष्ठे ३७ अथमघादिवीनाह० पित्तमतुइहभान्निचादिदेवं नयभजरवाश्च तयाभयुकूढ औफः हरिभमवाधिरत्रमेत्रत स्युगसदचलावेसुभादुयकू ऊभौथे ३८ अथस्वरबलज्ञानार्थंहस्वारमा

| कृ१ | व२ | क३ | ह२ | उ४ | मुख्य | प२ | भ३ | ज३ | मुख | म१ | स२ | द३ | ये३ | ल४ | मू | ठ२ | प३ | र३ | त४ | विष्व |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| इ२ | चि२ | कि४ | हे४ | श्लेषा | लि२ | पि३ | भि४ | जि४ | खि२ | गि२ | सि३ | दि४ | खि४ | भरणी | भि२ | टि३ | पि४ | रि४ | ति२ | स्व |
| उ३ | बु४ | आर्द्रा | कु० | डि१ | लु३ | पु४ | मघा | आप्ते | खु२ | गु३ | सु४ | उत्तरा | भु | लि१ | मु३ | डु | उत्तरा | स्वाति | तु२ | |
| | मवे२ | कृष्ण | हु१ | डु२ | | षे१ | पूर्व | ज्ञित | | | पूर्वा | भाद्र | | लु२ | | षाढा | | रू१ | | |
| ए४ | | पुन१ | हे२ | डे२ | ने४ | मूल | फो | जु१ | खे३ | गे४ | भाद्र | ज्येष्ठा | | | मे४ | टे१ | धि | रे२ | ते३ | |
| | वो | वकू | हे | | नो१ | धा२ | भे१ | जे२ | खो | धृत | से१ | रेवती | चे२ | लु३ | फाल | टो | पं | रो३ | तो | |
| श्रोत | २ | कू२ | है० | डो४ | जेष्ठा | | मौ२ | जो४ | धनिष्ठा | गा | सो२ | रौ२ | चो२ | लो | | २ | धौ२ | | ४ | |

हे नाडेः ३० नीचैः ६० निधिः ६० शानरय १२० नष्टुकः १५ मितैः श्वासपर्य्यायकैर्वीस्य त्रैवानोनलोवुद्धितिरपृथग पंतराधोप्यस्तुत्वेन्यसासाद्य वनीतोहृदयकमलजेयत्रएक त्रतेनश्वासानानाडि ६०० तंख्यानन्तरसंकमलेऽहर्निशंत्रिमोव ३९ गिमो १ अथप्राच्यादि

यामार्द्धभोगा-छनिरस्तियस्यांयदानयायात्ककुभंतदातास्। २९ अथ पृष्ठेवर्ज्योहोरामाह। वारारंभा
द्युदलः खघ्नामाशा अत्र वारपाहोरा: रविसितबुधेन्दुशनिगुरुभौमानामरिखगस्य सा वर्ज्या ३०
अथविरुद्धयामगूढराहुरव्यादिषु पुराचरत्नेप्रहरस्यलान्याह। वामांशे नविरुद्धयामदलेजः

| वास्तु | स्कन्द | काल | सू | चं | मं | बु | बृ | भृ | श | रा | के |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| २ | ३ | ७ | १ | १२ | ११ | १० | ६ | ८ | ४ | ५ | ६ |
| करौ | कंठे | हस्ते | श्रोत्रे | मुखे | गुह्ये हृदि | स्तने | उरौ | गुदि | ग्रीवा | भुजे | गंडस्थले |

प्रभाजके गूढजोरा हौस्यात्तु कुचाधरे स्कृति शिरोहस्ते
प्रहरारवेः॥ चेत्राकस्पभुजहृयप्रहरत्नेशत्तु ग्रह स्यापितु
स्याद्धातः॥ किलहोरयाह ट्टिमुखेवखज्ञादियेषुधूवं ३१ अ
पर्याप्य स्वांप्रहारस्यलान्याह॥ लग्नाद्राशेरत्र पुंसः करिष्क
विनयाधोदमामातसंस्थारवेराह नुनेवापिह्धिघमघसह साम् ह्रि वकंहस्ते वद्येजिघो कदेशे गुदइलितद
नुग्रंथिदेशेएदभागे वास्तुः स्कन्दः सकालः ख२ल३ स७ मनिशागः करौ कण्ठे हस्तेच ३२ अथपृष्ठेश्राहिचक्रवि
सद्धसाध्यनदेशा एवाह। श्राद्धंक्रिभित्सिनो
श्राहिचक्रे यद्येकानाडांस्थुः नामा



र्कचंद्रभानिप्रथनेतदहस्सजेघना ते अंशितोकुजवधौस्थंजेत चगादेस्तुनिषिद्धार्द्धयामेस्थूले
अथवारदिक्छूलमाह। शानिचंक्रोगुरुसू
विशालत: ३४ अथनक्षत्रहस्तांस्वस्वभुक्तमानेन तदेऽष्टांस्यादि सप्ताहेशातिनक्षत्राणां अथवातभोगमाह॥

स॰सा॰
५

मगाइइस्यात्स्वगोदन्निराः॥४४॥ अथप्रश्नेऽपरं विशेषमाह प्रश्नेऽश्वासांतगीमेचेज्जयस्स्यादङ्गोनि
र्गोसत्रसूत्नांतदेततः॥लाभः पुत्रादेश्च वाहस्य हृतेपृच्छकस्तु सृक्तः शून्यजेस्यादसिद्धि॥४५ अथसूर्य
वंद्रनाडीवहनेकर्त्तव्यकर्माण्याह॥ चांद्रेवदने च पविलोकनगेहवेशूणपट्टानि शोषमुखकर्मभवे
च्छुभेयत्सौरेतुमज्जनवधूरतिभुक्तिपुद्धमुखमवेदशुभकर्मफलायसत्यम्॥४६ इतिस्वरव
लंसमाप्तम्॥ अथरतिविधिविवदेत्ततममुखमंस्त्रीणांद्रावणमाह॥ वहतिदृगदृश्ये निवाञ्छेदंगनायानर
स्यशुभगामनुस्तेऽपिशानुस्तत्रकालेरतेषु॥ स्त्रवतिमदनवारि निर्भरं साध्यपुंसायदिशिरखिन्न
वानताशक्तिवद्गविताःस्यात्॥४७ अथवशीकरणमाह सुषुम्नायानिजवहदुत्तरश्मिनागना चेद्रेचेद्दह
नगतेपिवेत्तदानीं॥ भ्रामस्सावशावतिताभियंचेदकातं चंद्रेचेषु मारिणवहंमुहुः पिबंति॥४८॥ अथमोह
नमाह॥ मोहनंमदनयुद्धमूत्विरेतत्सुधीरशाश्वात्रचेद्वले॥ प्रोक्तमाद्रृपैतिमेपुनंद्रावयेत्तदव
लासुविफुला॥४९ अथघातविधयेबलमाह स्वरछायानिलार्केन्दुयोगिनीराहुवलैः अन्यै
श्चघातमावधनूजयस्येवधनेवहु॥५०॥ अथभक्ष्यविधोसाधारणादिजयसाधनानौषधान्याह आस्य
तालजटाध्यजेतकदलंशीर्षेशरखार्जूरीकेमूलेकस्यइषुलेगेन्द्रस घतैः भुक्तेरजोलेश्चैते: केथ्याह्यु
रमूलीकालिरशाम्ने: पुष्यार्कप्राप्ताध्वेत्ताजगध्यावामहतेडलोवुभिरयोपाकाजटापीहशी॥५१ अंको

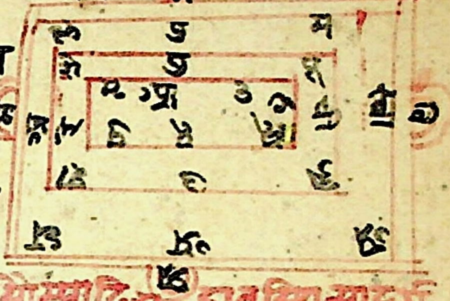
दिक्त्रयगामिनी प्राणवायौ पादकृत्तिनवकान्तिस्तांपत्रज्ञानमाह ॥ इन्द्रादिदिग्दले चरे चेस नेरगायमोकुं
रु वेषविषयायमुदेगमायचेतोभवेत्कृपयितुं चन्द्र पास्यदायपत्रहृयांतरवरेतुमुदेपरस्ये ४० अथ
प्राणत्वादितत्ववहनफलमाह धरांबुनाम्युभंमहोविमिश्रितंफलंभवेत्त ॥ मरुन्नभश्च दुःखदेमते
स्वार्थवेदिभिः ४१ अथ हत्कमपत्रेषु दिनेन्द्रवहनकथनपूर्वकं प्राणवायुसंचारेः कलादिज्ञानमाह द्वेद्वेपत्रे
नेन्दुवहतइतरयोः पंचपंचेतिघट्यो: नार्कोगुर्वक्षरोक्ताः सुरघचनतल्ला ३६० सुघटीकव्यतेच
शुक्लादि त्रित्रिघस्त्रेर्हिमगुरपरघरविप्रस्तुवच्छे अवक्तः अथ पक्षोद
कनाड्यावदि वहति शशिरवीपंच घस्त्रेर्म्नतिः स्यात् ४२ अथ रवा
दिवहने युद्धादौ भंजयमाह ॥ अर्केग्नितत्ववहने हरिलयायएको
पिहंतिसुवहून्किमिवात्रचित्रम् भूज्योरिपुस्त्वपतनाम पिवा
हपवेनिहिपपविहिपतिलललमरीन्द्रलगोन ४३ अथ रवौ
नाडीवहने प्रश्नोविशेषमाह प्रश्नेचेद्वहत्तु वामनेरेगोजये
निश्चितस्स्यंदलगलेनफ्छवजयीन्यस्यहृतेदति सूर्य
चेद्विषमाक्षराणिशशिनिवृतेसमानिफलवम् जेतासोपुरतोपिवा



ग्र:सा

गाः सौम्यखेटदुर्गे भंगश्चात्रयुद्धं विनापि ८९ प्रत्यासत्ते वेष्टके स्वेव भंगो दुर्गे भग्ने पुष्ठवेष्ट्रा
त्रसिध्यः प्राकारे तः क्रूरखेटा वहिर्वे सौम्याः को कुदुर्ग भंगस्तदा नो ६० वप्रवाह्ये क्रूरखेटा
श्चमध्ये सौम्याखेडौ स्यात्नदुर्गस्य भंगः वप्रे सौम्या अंतरावा हा तश्च क्रूरा भंगसैन्य योः स्याद्युयो
स्तु ६१ वप्रे क्रूरा वाह्यमध्ये तु सौम्यास्तुल्यं युद्धं खेडि पातोन्यच्चैवं च वप्रवाह्येतर्य्ये द क्रूरसौम्या घोरे युद्धे स्यात्
द्वयोर्भंगएव ६२ तुल्या वाह्ये तथ्य चैव क्रूरसौम्या संधिवा चोपायापि दुर्गेशायोस्तु नारी स्तंभ दुर्गे प्रवेशोपि वा
चेत्स्वदेशजीव संदेहे गस्यात्प्रवेशो ६३ क्रूरध्या दुर्गेचाकुलो घिथ युद्धं व्यसासेनांतस्य सैन्यं विद्ध्यात् । द
क्षिणसारेकाख्यवक्रस्य सौम्यो दुर्गे भंगो निर्दिष्टांतिक्रमेण ६४ यत्र क्रूरस्तेन युक्तः शशीवा खेडिस्तत्रै
तस्य धे वप्रवेशः ।। क्रूरास्तत्र मैत्रेय दान्तस्तदानीं दुर्गमुत्का याति दुर्गाधिनाथ ६५ निर्गतस्ते वाह्यगेव
क्रितश्चि क्रूरः खेडिनिश्चितं तत्रकुर्य्यात् वप्रस्थांतर्हति मध्यप्रवेशाद्वे वक्री चेद्भवति वाह्यस्य सैन्यं
६६ दुर्गेतद्देशभजयोरिति कोटयोस्तु भंगं विचार्य्य दिशि तत्र लग्नं तु वाच्याः ग्रामं नगरावलप्यपीत्यनवक्रदे
षे सेनान्यमन्यमपदिश्य दिशोप्यवंतु ६७ इति कोटचक्रं अथ सर्वतोभद्रचक्रमाह पूर्वादीचीलिखाली
नयनयगणिताः कंदकोष्टेष्वथैषोल्करौ स्तोय १६ स्वरान्बहु द्रुतह द्विगालिषुभान्तेरातु नारीवर्णास्तु
शेकानवकहड मुखान्नांतराभ्रद्वयादीनेषदावसैवधिनारे मह लिखचाप्ये मध्यतानंदिकादीन् ६८

लालस्थलाधुरवासर्पी च्चीशिपिचूडिका विष्णुक्रांताकाकजंघानिलीदेवीचपटला ५२ भुजास्यमूर्द्ध
गाभ्रकातज्ज टेकापिवारयेत् रसोदसूराथ्रा स्त्रीघेयावज्जीयतिनोदरे ५३ स्वर्णमासिंकांकिन्यांसिं
हीवृष्ट: पतज्जर गृंतस्यपारद: सिद्धमनुज्ञा जयदश्चास्यग: ५४ अथवादजयदानोयथामाह चक्रे
मर्दकगोजीद्रुपालिचिचूडाजटास्वपि।। एकैकावादजयदापुष्याकांतास्यमूर्द्ध गा ५५ इति औषधीप्र
करणं समाप्तम् अथ यायिस्थायिनोर्जयपराजयौ विविक्तकोटचक्रमाह
भास्वादिमूलिखेद्धुवद्युपरि च जीलेयपरादिपयन्त्रिभाद्वयात्रीलिलिखेत्तरा
छ्विवभनोच्ये स्त्रांवसाळीवाहि: आग्नेय्यादित्रितोयमदिशि न्यस्यन्
वहि: सप्तमे मध्यासुवतोन्ययो: स्थपवुहिर्दिं मध्यमेतु अवदम् ५६ को
णभानि प्रवेशेषु दीयगान्यानि निर्गमे वदेच्छकं सप्तके तु मध्ये स्त्रैवे
तृष्टये ५७ उपलक्षणमेवकृत्तिकादे प्रथमे दुर्गमेवं वैरिणं वा ग्रहे अथ क्रूरसौम्यादिग्रहावस्थितादुर्ग
चक्रमध्यस्थमालिखेत्तरस्वरसौम्यमध्यमं स्यात् ५८ ... वेधके वेधसीलात् क्रूरामध्येवप्र
भंगरत्नादिकमाह क्रूरा: अंतर्वाध्य गा: सौम्या ...



स॰ सा॰

७

हतिराज्ञो यदेशो ड्डानिद्रुष्टे ज्ञासाभिधे केयोरविभयो स्तत्त्वङयेनिर्दिष्टोत् ७४॥ इति सर्वतोभद्रचक्रम् ॥ अथ ऋणधनशोधनमाह ॥ साध्यं काकठ गाद यस्तत तुन गाभ भानुनिम्नगा रात्राः स्रस्र मननरयनभ वगा साधक ऋणमधिकं शोधतो दाप्रैः ७५ इति ऋणधनशोधनं अथातुरस्य साध्यासाध्यप्रश्न तज्ज्ञानाय शकुनमाह काष्ठादु तेनात्तु चुविसर्गं तुं सकाल्ये ध्रुवं कास्तिलारि भ सतिभगु कारकाः स्युः॥ स्तातुरा यतदे स्यदभक्त शोवे जीवेदीसमधिके म्रियते समाने ७६ अथ रुक्प्रश्ने एतद्विशेषमाह ॥ प्रश्नाह लोम्भ ग्रामतिः कुयक्ता भुयोर निच्चोलह्ता यशोधे के जीवितं रेतुरुजो मतिर्न भवेच्चलितिष्यं मरणामिधायाम् ७७ अथ भविष्यद्दर्शनस्य चकं छायापुरुषदर्शनप्रकारमाह ॥ प्रातः पृष्ठगते रवाव निमिषन् छायागलस्थां चिरं दृष्ट्वोर्ध्वं नयनेन यस्तितनरं छायानरं पश्यति तत्कर्णांसकरास्यपार्श्वहृदयाभावे तु रात्रा कोश्र छ ७ दिग ९ मू ९ रामा ह्विसमाः शिरोविगमतो मासास्तु षट्जीवति ७८ हृदंघ्रहृ छामुनिसंख्यमासान् छिदेहहृ द्ध्यातुमतिस्तदेव संख्याहि द्धानवर्षे मध्ये रोगामतिवेतिवदंति सम्यम् ७९ अथ छायापुरुषसमेव अन्यं शकुनांतरमाह ॥ स्नातस्य कर्णादेः पूर्वं शोषो ग्रागुल्फवक्षःस्थलम् सर्वाङ्गगस्य हृद् शोषे वर्णाम्मा साम्प्रांतरे मृतिः ८० अथान्यदाह हस्ते स्तेत्थिरास यदि न छिन्न दडोस्य हृच्छः परमा सांतर्नेमरणमभय संपदट हस्त योस्तु मस्तेशीर्षे यदि च कदलीकोरकाभं तदंतर्दृष्टं नोभीस्तरति सलिले वेत्स्वशोफेनमृत्युः ८१ इमानि विदूनि विचार्यमेवो

कर्णो कांधे ताले मुख पाते हृदय

के लेका फु ल



दृष्टि

अथ चक्रवेधमाह॥ रोहादिमध्यचतुष्कवेधंतो वेधमादिशेत् क्रमशः घङछं ठणाथांढथफोञञ
णामितिसर्वतोभद्रे प्रथमाग्रभस्थखेटो विध्येत्कोणास्थितान च अतुरः तिथिमपि पूर्णांचशुभः
क्रूरज वेधः शुभः शुभजः ६९ अथ वक्रशीघ्रग्रहवेधमाह वक्रो दक्षं करोगत्वा पथवा मेषीचेतोवि

| अ | क | रो | म्ट | आ | पु | पु | श्ले | आ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भ | उ | म | व | क | ह | उ | ऊ | म |
| अ | ल | ल | ढ | मि | क | लृ | म | पू |
| र | ख | [illegible] | औ | [illegible] | अ | सिं | ट | उ |
| उ | द | मी | [illegible] | [illegible] | [illegible] | क | प | ह |
| पू | श | कुं | अः | [illegible] | [illegible] | तु | र | चि |
| श | ग | ऐ | म | ध | व | ए | त | स्वा |
| ध | स्र | ख | ज | भ | य | न | अ | वि |
| इ | अ | अ | उ | ए | मू | ज्ये | अ | ई |
| | अ | थ | सर्व | तो | भ | द्र | चक्रम | |

ध्ये द्वीक्ष तो ग्रसमस्तु नित्यं वक्रो राहुकेतू इनेन्दु निसंशी घ्रोद्दृग्ध्य
घोतुल्यरूपे ७० उद्वेगार्थविनाश रोगमृतिदा विध्येत एकादयावर्ती
हानि रुडोभ्रमो चिनुरु जो विध्येतिथ्योभीरपि राशो विद्धनतिश्च
पंचसुमृतिर्विध्यनूक्षईश्चः सितः प्रज्ञा सर्वसुखे रति विद्धयतेव
कोश्चतीष्टाद्भुमे ७१ क्रूरावक्रेतीवदुष्टा रविस्या धमा शेषासादिक
सद्दिस्या स्तमेते प्राच्यादीशाणास्थिता चक्रमो यं सर्वाश्चास्तु लायतो
शुभ्रिमद्धिः ७२ अस्याशास्थे राजादेः क्रूरवेधवत्फलं वाच्यम्
उदिताशास्थेः सौम्य वेधवत्फलमादिशेत्प्रज्ञः ७३ हानि रुक्का
लहो पिपीडितइह स्याज्जन्मभे सान्नुये ं कर्मोक्षि द्धि रथो भिदाचय
१६ मिते द्रव्यहृत्ययः स्याज्जुषे २८ गोरे २३ देहहृजः प्रारे १५ सुख

स. र.

२

उं विनिश्चयेस्थाप्युचरणे यथामात् । आहुर्हि मुख्यं प्राकुनं स्वदेहचिन्हानिवाह्यैः शकुनैः किमस्मैः ८२

| सा | ध्य | च | क्र | म | सा | ध्य | क | र्म | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| [illegible] | अ | क | ठ | ब | ११ | अ | क | ठ | ब |
| [illegible] | आ | ख | ड | भ | १२ | आ | ख | ड | भ |
| [illegible] | इ | ग | ढ | म | १३ | इ | ग | ढ | म |
| नं. | ई | घ | ण | य | नं. | ई | घ | ण | य |
| [illegible] | उ | ङ | त | र | नं. | उ | ङ | त | र |
| [illegible] | ऊ | च | थ | ल | १६ | ऊ | च | थ | ल |
| [illegible] | ए | छ | द | व | १७ | ए | छ | द | व |
| [illegible] | ऐ | ज | ध | श | नं. | ऐ | ज | ध | श |
| [illegible] | ओ | झ | न | ष | १९ | ओ | झ | न | ष |
| [illegible] | औ | ञ | प | स | २० | औ | ञ | प | स |
| [illegible] | अं | ट | फ | ह | [illegible] | अं | ट | फ | ह |

सकलस्वरशास्त्रसारमेतं त दत्ते परिसंक्षिप्य मयानागा दिसर्वम् । गुरुभक्तियुषो प्रथ म्नोत्तवक्ते: स्फुरतादेतयमीप्सि तार्थसिद्ध्यै ८३ वेशोकसमु नीश्वरस्याखिवदासावाद्दु राख्यातितः सम्राडग्निविदा य यस्य जनकः श्रीसूर्यदा सो जनी यन्मातुर्येशसा दिशो देशाविशाला तावलेत्याः यथान्सम्राज्य स्वरशास्त्रसारवि रचितरामोवसन्नैमिचे ८४ इति श्रीरामचंद्रसोमयाजिविरचितस्वरसारसंग्रहस्समाप्तमगमत् । सं १८९६

| त्रि | ला | रि | म | स | ति | म्न | ग्र | का | र | का | रोग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | ३ | २ | ४ | ७ | ६ | ५ | ३ | १ | २ | १ | स्थान |
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ए | ऐ | ओ | औ | अं | चक्रम् |
| क | ख | ग | घ | ङ | च | छ | ज | झ | ञ | ट | |
| ठ | ड | ढ | ण | त | थ | द | ध | न | प | फ | |
| ब | भ | म | य | र | ल | व | श | ष | स | ह | |



२

9

पुस्तक [illegible]

समरसारकि [illegible] पत्र [illegible]

[illegible]